RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

सामवेद में प्रयुक्त उपमार्थक–निपात : एक विवेचन

हरीश कुमार

शोध–आलेख सार :

सामवेद में उपमार्थक निपात के कुल 117 प्रयोग प्राप्त हुए हैं। इनमें 'इव' निपात के 51, 'न' निपात के 56 प्रयोग, 'चित्' निपात के 4 एवं 'नु' निपात के 6 प्रयोग उपलब्ध हुए हैं।

आचार्य यास्क के अनुसार जो विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त होते हैं वे निपात कहलाते हैं।[1] आचार्य पाणिनि ने अद्रव्यार्थ चादियों को निपात कहा है।[2] आचार्य यास्क ने 3 प्रकार के निपात स्वीकार किये हैं। 1. उपमार्थक, 2. कर्मोपसंग्रहार्थक, 3. पदपूरणार्थक। सामवेद में उपमार्थक निपात 'एक विवेचन' शोध–पत्र का मूल उद्देश्य यही है कि सामवेद में प्रयुक्त उपमथिक निपात का प्रयोग कितनी बार एवं किस अर्थ में हुआ है। उपमार्थक निपात आचार्य यास्क के अनुसार चार है

इव :– आचार्य यास्क के अनुसार यह निपात वेद और लोक में उपमार्थक स्वीकार किया गया है।

न :– इस निपात को लोक में प्रतिषेध अर्थ में स्वीकार किया गया है एवं वेद में निषेध एवं उपमार्थक स्वीकार किया गया है।

चित् :– इस निपात को अनेक अर्थ वाला स्वीकार किया गया है

नु :– यह निपात भी अनेक अर्थ वाला स्वीकार किया गया है।

इव :– नेमि चक्रं इव[3] = नाभि को चक्र जैसे।

महस्य तोदस्य इव[4] = बड़े धनवान् की तरह।

इह इव श्रृण्वे[5] = यहीं होने के समान सुनता हूँ।

समुद्राम सिन्धवः[6] इव = जिस प्रकार समुद्र की ओर नदियाँ दौड़ती हैं।

सूर्यः इव अजनि[7] = सूर्य के समान तेजस्वी हो गया हूँ। 2 प्रयोग प्राप्त

चर्म इव समवर्तयत्[8] = चमड़े के समान फैलाता है।

महान् इव[9] = श्रेष्ठ की तरह।

अदुग्धा : धेनवः इव[10] = दूध न दुही गायों के समान।

सहस्त्रेण इव[11] = हजारों के समान

रथाः इव[12] = रथ के समान। 2 प्रयोग

उषा इव[8] = उषा के समान

महिषाः वनानि इव[9] = भैसें जैसे वन में जाते हैं। 2 प्रयोग

अश्वया इव[10] = घोड़ी के समान।

अपां ऊर्मिः इव क्रीडन्[11] = जल की लहर के समान खेलते हुए।

सोमः इव पवते[12] = सोम के समान जाते हैं।

सूर्यः इव[13] = सूर्य के समान = 2 प्रयोग

गिरेः रसाः इव[14] = पर्वत के जल के समान।

सूर्यस्य रश्मयः इव[15] = सूर्य की किरणों के समान।

राजा इव[16] = राजा के समान। 2 प्रयोग

अपां ऊर्मिं इव[17] = पानी की लहरे जिस प्रकार जल्दी चलती है।

मातृभिः वत्सः इव[18] = माता के द्वारा बच्चा जिस प्रकार नहलाया जाता है।

उशना इव[19] = उशना ऋषि के समान।

रथाः इव[20] = और रथों जैसे।

विशः राजा इव[21] = प्रजाओं के शत्रुओं को दूर करने के लिए जैसे राजा जाता है।

मित्रमिव प्रियः[22] = मित्र के समान प्रिय।

कविमिव[23] = कवि के समान।

वाजमिव[24] = घोड़े के समान।

सूर्य इव[25] = सूर्य के समान। 2 प्रयोग

कण्वाः इव[26] = कण्व के समान।

सूर्या इव[27] = सूर्य के समान।

रश्मयः इव[28] = किरणों के समान।

पिता इव[29] = पिता के समान।

समुद्र इव पप्रथे[30] = समुद्र के समान विस्तृत

सखा सख्ये इव[31] = जैसे एक मित्र दूसरे मित्र की सहायता करता है।

चक्षुः इव[32] = सूर्य को देखने के समान।

यःउग्रः इव[33] = जो अग्नि शूरवीर के समान।

अश्वा इव[34] = घोड़ी के समान।

धेनुं इव[35] = गाय के समान।

आयुधानि इव[36] = शस्त्रों जैसे।

राजा इव[37] = राजा के समान।

होता इव[38] = होता के समान।

रथाः इव[39] = जिस प्रकार रथ तैयार करते हैं।

महिषी इव[40] = रानी के समान।

प्रियं मित्रं इव[41] = प्रिय मित्र के समान।

द्यौ इव[42] = द्युलोक के समान।

इन्द्रस्य इव[43] = इन्द्र के समान।

इस प्रकार सामवेद में उपमार्थक 'इव' निपात का प्रयोग 51 बार हुआ है।

न – उपमार्थक एवं निषेधार्थक

वेद्यसे होत्रे न[44] = विद्यात्रा और देवो के समान।

गवे न[45] = गायों जैसे।

द्यौः न[46] = द्युलोक के समान।

कर्मणा न किः नशत्[47] = कर्मो से दबा नहीं सकता।

नः किः आ मिनाति[48] = कोई भी रोक नहीं सकता।

भूणिं मृणं न[49] = भरण पोषण करने वाले शेर के समान।

अंहः न[50] = पापों से सुरक्षित होने के समान।

अंहः न[51] = पाप नहीं लगता।

अश्वः न[52] = घोड़े के समान। 2 प्रयोग प्राप्त

अयं न[53] = जैसे मह सूर्य।

रिहन्ति न[54] = उसी प्रकार चाटती है।

न अश्नुते[55] = नहीं मिलता।

शिशुं न[56] = बालक को जिस प्रकार सुशोभित करते हैं।

अश्वं न[57] = घोड़े के समान।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

क्रुतं न[58] = यज्ञ के समान।
अर्वन्तः न[59] = घोड़ों के समान।
पार्थिवः न[60] = पृथ्वी पर नहीं
सूर्यः देवः न[61] = सूर्य देव के समान।
गावः न[62] = गायों के समान।
अर्वा न[63] = घोड़े के समान।
मित्रः न[64] = मित्र के समान।
देवः सूर्यः न[65] = तेजस्वी सूर्य के समान।
आपः न[66] = पानी के समान।
समुद्रे न[67] = जिस प्रकार समुद्र में।
अश्वं न[68] = घोड़े के समान। 2 प्रयोग
शिशुं न[69] = शिशु के समान।
आशवः न[70] = शीघ्रगामी घोड़े के समान।
मातरः वत्स न[71] = गाय जैसे बछड़े के पास जाती है।
वज्रः न[72] = वज्र के समान।
शूरः न[73] = शूर के समान।
श्येनः न[74] = पक्षी के समान।
गां न[75] = बैल के समानं
अश्वं न[76] = घोड़े के समान।
वरुणं न[77] = वरुण के समान।
वाजी न[78] = घोड़े के समान।
आपः न[79] = पानी के समान।
न तुष्टुवुः[80] = स्तुति नहीं की।
इन्द्रः न[81] = इन्द्र के समान।
मित्रं न[82] = मित्र के समान।
मातरा शिशुं नः[83] = जिस प्रकार माता–पिता बच्चों के पिछे जाते हैं।
रथे पादं न[84] = जिस प्रकार रथ में पैर रखते हैं।
सूरः न[85] = सूर्य के समान।
अश्वं न[86] = घोड़े के समान।
धीराः न मिनन्ति[87] = धीर लोग नहीं तोड़ते।
पिता च न अस्ति[88] = रक्षक भी कोई नहीं है।
अयेत न[89] = भागता नहीं है।
वृषभः न[90] = बैल के समान।
रथं न[91] = रथ के जैसे।
अश्वं न[92] = घोड़े के समान।
प्रियं मित्रं न[93] = प्रिय मित्र के समान।
इन्द्रः न[94] = इन्द्र के समान।
न ईशीत[95] = शासन नहीं कर सकता।
नः मा अभ्यागमत्[96] = हमारे ऊपर आक्रमण करने की इच्छा आये।
ईशानं न याचिषत्[97] = स्वामी से नहीं माँगता।
'न' निपात के सामवेद में कुल 56 प्रयोग प्राप्त हुए हैं जिसमें से 46 तो उपमार्थक हैं एवं 10 निषेधार्थक।

चित् (अनेकार्थक)
तत् चित्[98] = उसी प्रकार = उपमार्थक
तेन दृढ़ा चित्[99] = इस मन से दृढ़ से दृढ़ धन को भी = अपि अर्थ में
सुते चित्[100] = छनने के बाद = पदपूरणार्थक
आपः चित्[101] = जल भी = अप्यर्थ
'चित्' निपात के चार प्रयोग प्राप्त हुए हैं।

नु (अनेकार्थक)
सदा उपो नु[102] = सदा तुम्हारे पास है = पदपूरणार्थक
नु वयं[103] = हम पदपूरणार्थक
नु एत[104] = शीघ्र आओ = शीघ्रतायाम्
ते हरी नु योज[105] = अपने घोड़े तु रथ में जोड़ = पदपूरणार्थक
अस्य नु पिब[106] = इसको पी = पदपूरणार्थक
नु = शीघ्र ही[107] = शीघ्रतायाम्
नु निपात के 6 प्रयोग प्राप्त हुए हैं।
सामवेद में उपमार्थक निपातो में 'इव' निपात के 51 प्रयोग, 'न' निपात के 56 प्रयोग 'चित्' निपात के 04 प्रयोग एवं 'नु' निपात के 6 प्रयोग उपलब्ध हुए हैं उपमार्थक निपातों का कुल प्रयोग 117 बार हुआ है।

सन्दर्भ सूची

1. उच्चावचेष्वर्थेषु निपतन्ति ते निपाताः। हिन्दी निरुक्त, पृ. 33
2. चादयोऽसत्वे। पाणिनी अष्टाध्यायी, (1.4.57)
3. सामवेद, पूर्व.आ. 10.4
4. सामवेद, पूर्व.आ. 11.1
5. सामवेद, पूर्व.ऐ. 3.1
6. सामवेद, पूर्व.ऐ. 3.3
7. सामवेद, पूर्व.ऐ. 4.8 (उ. 14.1.1) 5 थु
8. सामवेद, पूर्व.ऐ. 2.8
9. सामवेद, पूर्व.ऐ. 12.5
10. सामवेद, पूर्व.ऐ. 13.1
11. सामवेद, पूर्व.ऐ. 13.3
12. सामवेद, पूर्व.ऐ. 14.9 (उ. 11.2.1) 6 ला
13. सामवेद, (उ. 2.5.2) 16 ते, (उ. 14.1.1) 5 थु
14. सामवेद, (उ. 3.4.2) 13 हि
15. सामवेद, (उ. 6.1.3) 2 पा
16. सामवेद, (उ. 6.2.5) 4 को, (उ. 10.9.1) 3 गू
17. सामवेद, पूर्व. पाव. 7.12
18. सामवेद, (उ. 7.6.2) 19 यि
19. सामवेद, (उ. 8.1.1) 1 झै
20. सामवेद, (उ. 8.1.4) 1 झै
21. सामवेद, (उ. 8.2.5) 2 ण
22. सामवेद, (उ. 9.9.1) 18 यी
23. सामवेद, (उ. 9.9.2) 18 यी
24. सामवेद, (उ. 10.6.5) 7 खे
25. सामवेद, (उ. 10.10.1) 14 लू, (उ. 15.4.3.) 14 हु
26. सामवेद, (उ. 11.2.2) 6 ला
27. सामवेद, (उ. 11.2.2) 6 ला
28. सामवेद, (उ. 11.3.1) 9 ग
29. सामवेद, (उ. 12.2.2) 4 यि
30. सामवेद, (उ. 16.4.2) 18 रि
31. सामवेद, (उ. 16.4.2) 20 ल
32. सामवेद, (उ. 18.2.4) 5 ठू
33. सामवेद, (उ. 18.4.3) 18 य
34. सामवेद, (उ. 19.2.2) 6 लि
35. सामवेद, (उ. 19.4.1) 13 लि
36. सामवेद, (उ. 19.5.1) 16 कि
37. सामवेद, (उ. 19.5.3) 18 ती
38. सामवेद, (उ. 20.2.3) 8 ली
39. सामवेद, (उ. 20.4.3) 17 रौ
40. सामवेद, (उ. 20.6.1) 4 या
41. सामवेद, पूर्व. आ. 1.5

RRIJM 2015, All Rights Reserved

42. सामवेद, पूर्व. आ. 8.3
43. सामवेद, पूर्व. आ. 8.6
44. सामवेद, पूर्व. आ. 11.2
45. सामवेद, पूर्व. ऐ. 1.1
46. सामवेद, पूर्व. ऐ. 6.2
47. सामवेद, पूर्व. ऐ. 14.1
48. सामवेद, पूर्व. ऐ. 19.4
49. सामवेद, पूर्व. ऐ. 20.5
50. सामवेद, पूर्व. ऐ. 26.6
51. सामवेद, पूर्व. ऐ. 32.8
52. सामवेद, पूर्व. ऐ. 32.8, पूर्व. ऐ. 33.4
53. सामवेद, पूर्व. ऐ. 36.3
54. सामवेद, पूर्व. पाव. 8.6
55. सामवेद, पूर्व. पाव. 9.2
56. सामवेद, पूर्व. पाव. 10.4
57. सामवेद, पूर्व. पाव. 11.3
58. सामवेद, पूर्व. आर. 4.11
59. सामवेद, (उ. 1.1.1) 3 कौ
60. सामवेद, (उ. 1.4.2) 11 यी
61. सामवेद, (उ. 2.5.3) 16 ते
62. सामवेद, (उ. 5.1.1) 3 भी
63. सामवेद, (उ. 5.5.1) 13 चा
64. सामवेद, (उ. 5.7.3) 22 ङ
65. सामवेद, (उ. 6.1.3) 2 पा
66. सामवेद, (उ. 6.1.2) 3 है
67. सामवेद, (उ. 6.4.2)
68. सामवेद, (उ. 6.6.3) 16 चु, (उ. 10.11.1) 19 का
69. सामवेद, (उ. 7.6.1) 19 यि
70. सामवेद, (उ. 9.2.5) 3 दू
71. सामवेद, (उ. 9.2.7) 3 दू
72. सामवेद, (उ. 9.6.3) 10 छे
73. सामवेद, (उ. 9.7.2) 12 चा
74. सामवेद, (उ. 10.3.3) 4 बी
75. सामवेद, (उ. 11.2.2) 5 यी
76. सामवेद, (उ. 12.2.2) या
77. सामवेद, (उ. 12.4.1) 11 (5)
78. सामवेद, (उ. 12.5.1) 15 बू
79. सामवेद, (उ. 13.5.3) 13 घी
80. सामवेद, (उ. 14.1.3) 5 थु
81. सामवेद, (उ. 14.3.3) 11 हा
82. सामवेद, (उ. 15.4.2) 12 टा
83. सामवेद, (उ. 17.2.2) 8 टा
84. सामवेद, (उ. 18.2.2) 6 डी
85. सामवेद, (उ. 20.1.1) 4 छ
86. सामवेद, (उ. 20.1.1) 5 चि
87. सामवेद, (उ. 20.3.2) 11 हि
88. सामवेद, (उ. 20.3.2) 12 ता
89. सामवेद, (उ. 20.5.3) 18 ठी
90. सामवेद, (उ. 21.1.1) 1 फे
91. सामवेद, पूर्व. आ. 1.5
92. सामवेद, पूर्व. आ. 1.7
93. सामवेद, पूर्व. आ. 4.1
94. सामवेद, पूर्व. आ. 5.6
95. सामवेद, पूर्व. आ. 11.8
96. सामवेद, पूर्व. ऐ. 2.4
97. सामवेद, पूर्व. ऐ. 20.5
98. सामवेद, पूर्व. ऐ. 7.9
99. सामवेद, (उ. 8.6.3). 14 पी
100. सामवेद, (उ. 10.9.3.) 12 खा
101. सामवेद, (उ. 15.4.2.) 14 हु
102. सामवेद, पूर्व. ऐ. 9.3
103. सामवेद, पूर्व. ऐ. 9.9
104. सामवेद, पूर्व. ऐ. 28.7
105. सामवेद, पूर्व. ऐ. 32.6
106. सामवेद, (उ. 2.3.1). 9 पी
107. सामवेद, (उ. 5.4.3.) 12 चा

RRIJM 2015, All Rights Reserved